इच्छाशक्ति

जीवन इच्छाशक्ति से शुद्ध होता है और अनंत भी किसी इच्छाशक्ति पर ही हो जाता है। इस शब्द से हर जीव प्राणी परिचित होते हैं क्योंकि इसके धारण होने के बाद ही जीवन शुरू होता है। हाँ मानव व अन्य जीवन में एक अन्तर जरूर पाया जाता है। मानव की इच्छाशक्ति पूरे ब्रह्माण्ड की सैर तक सम्भव है, पर अन्य जीव प्राणी की क्षमता आवयश्कता तक सीमित होती है। इसके अतिरिक्त इच्छाशक्ति अपने गुण की शक्तिशाली ऊर्जा छोड़ते हैं। जो सृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक होता है। पुष्प व अन्य वृक्ष जो सुगन्ध छोड़ते हैं वह उनकी केन्द्रित इच्छाशक्ति का परिणाम होता है मानव समाज अपनी इच्छाशक्ति को अनन्त बताता है पर यह अनंत कैसे हो सकता है जब कोई वस्तु प्रकृति में नहीं होगी तब तक वैसा भाव इच्छाशक्ति से नहीं पैदा हो सकता है। शरीर प्रकृति का परिणाम है इसलिए प्रकृति से परे नहीं जा सकता है। इसीलिए वह कहीं भी विचरण कर सकता है। जिसे सामान्य नेत्र नहीं देख पाते है। मन में एक स्वाभाविक प्रश्न आता है कि आखिर इच्छाशक्ति क्यों पीछे पड़ी रहती है और पीछे पड़ी है तो कोई प्रत्यक्ष लाभ क्यों नहीं देती? परिणाम में जवाब मिलता है। प्रकाश रूप होने के कारण गति दिखायी नहीं देती है पर अपने प्रति समाज की व्यवहारिकता इसका प्रत्यक्ष परिणाम होता है। इच्छाशक्ति मनरूपी प्रकाश की ऊर्जा से गतिमान होती हैं यह ऊर्जा जिस तरह केन्द्रित करके ले जाते हैं, उसी तरह की इच्छा बनने लगती हैं जैसा सोचते हैं वैसी इच्छा शरीर में उत्पन्न होने लगती है। यह ऊर्जा प्रकृति से निकलकर अपने से संबन्धित विषय के अन्दर अपने जैसा भाव बनाने लगती हैं यह सच है कि व्यक्ति भोजन कुछ करे पर उसका परिणाम वही होता है जो उसकी इच्छाशक्ति में आता है वैसी ऊर्जा उसके शरीर से अपने आप निकल जाती है। भोजन को पाचन का कार्य इच्छाशक्ति से होता है। यदि इच्छा ध्यान क्रिया से परिपक्व हो जाती है, फिर वह जैसा सोचता है वैसा होने लगता है। जब व्यक्ति अपनी सोच में नकारात्मक विचार लाता है तो उसके अन्दर से विरोधी ऊर्जा निकलती हैं यह ऊर्जा उसकी बीमारी का कारण बन जाती है। इच्छाशक्ति की क्रिया प्राकृतिक नियंत्रण से जुड़ी होती है। मन जब न्याय करता है तो उसका परिणाम इच्छाशक्ति देती है, जो प्रकृति क्रियाशील होती है। अपनी इच्छाशक्ति के सही प्रयोग से कोई भी व्यक्ति अपनी हर बीमारी से बच सकता है इसके उपयोग से दूसरों के दुख के कम कर सता है और भविष्य में होने वाले भावनात्मक व जीवाणु युद्ध में अपनी विशेष भूमिका निभाकर मानवता की रक्षा करता है। इच्छाशक्ति रूपी बल से हर युद्ध में विजय प्राप्त की जा सकती है। इच्छाशक्ति भावना की विजय का मूलमंत्र है।

प्रकृति प्राणी समुदाय का दर्शक, निर्देशक और रक्षक है।

—अशोक 'मानव'